Innovation and Integrative Research Center Journal
ISSN: 2584-1491 |www.iircj.org
Volume-1 Issue-2, Oct-2023, Page 45-59

धनबाद जिले के अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में एक अध्ययन

[1]नूतन कुमारी
[1]शोधार्थी कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
[2]डॉ. अदित्य प्रकाश सक्सेना
[2]शोध निर्देशक कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

शैक्षिक अनुसंधान का उद्देश्य शैक्षिक समस्याओं का वैज्ञानिक विधि से निदान व समाधान करना है। शिक्षा की परिभाषा वैज्ञानिक विधि से देते हुए शिक्षा में अनुंसधान को विशेष महत्व दिया है। शिक्षा को वैज्ञानिक स्वरूप देने के लिये इसकी समस्याओं, आधुनिकीकरण या संवर्धन के लिये नियोजित अनुसंधान पर बल दिया जाता है। अनुंसधान उन समस्याओं के अध्ययन की एक विधि है, जिसका अपूर्ण अथवा पूर्ण समाधान तथ्यों के आधार पर ढूढँना है। अनुसंधान के लिये तथ्य, लोगों के मतों के कथन, ऐतिहासिक तथ्य, लेख अथवा अभिलेख, प्रश्नावली के उत्तर अथवा प्रयोगों से प्राप्त सामग्री से हो सकता है।

अनुसंधान प्रक्रिया में परिकल्पना की रचना के पश्चात् उसके परीक्षण के लिये संकलित किये गये आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने की आवश्यकता होती है, जिसकी सहायता से हम अपने वांछित लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। इसमें सांख्यिकी की सहायता ली जाती है, जो आंकड़ो के संकलन, विश्लेषण, व्यवस्थापन एवं निष्कर्षों से संबंध रखता है। इसमें समस्त तथ्यों से संबंधित प्रदत्तों को एकत्रित किया जाता है तथा गणना द्वारा निष्कर्ष निकाला जाता है जिससे के निष्कर्षों की सत्यता एवं शुद्धता की भी जांच हो सकें। इसके लिये विभिन्न उद्देश्यों का निर्धारण एवं परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया तत्पश्चात् नियंत्रण अवस्थान मापनी, उपलब्धि अभिप्रेरणा मापनी तथा आत्मसम्प्रत्यय मापनी के द्वारा आंकड़ों का संकलन किया गया। प्राप्त आंकड़ो का सारणीयन करने के पश्चात् सांख्यिकीय गणनायें की गयी। आँकड़ों का संकलन से आशय आँकड़ो को एकत्र किये जाने से है। अनुसंधान प्रक्रिया में परिकल्पनाओं की रचना के पश्चात् अनेक परीक्षण के लिये एकत्रित किये गये तथ्यों को सुव्यवस्थित करके उन आँकड़ों की व्याख्या व विश्लेषण करना आवश्यक हाता है। विश्लेषण

के अंतर्गत प्राप्त आँकड़ों को क्रमबद्ध रूप से प्रदान किया जाता है तथा उनकों संघटक भागों में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है ताकि अनुसंधान प्रश्नों के उत्तर प्राप्त मूल आँकड़ों तथा संकेतीकृत सामग्री को व्यवस्थित व संक्षिप्त रूप प्रदान किया जा सके। प्राप्त क्रमबद्ध आँकड़ों का वैज्ञानिक पद्धति के द्वारा निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया जाता है ताकि अनुसंधान के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये जा सकें।

शोधकर्ता अपने अनुसंधान के परिणामों के संबंधों में ही विवेचना के द्वारा शोधकार्य से संबंधित समस्याओं का उत्तर प्राप्त करता है। यदि प्राप्त निष्कर्षों से रचित परिकल्पनाओं की पुष्टि होती है तब इसमें समस्या की ओर अपेक्षित संकेत होता है।

करलिंगर के अनुसार '' विवेचन के अंतर्गत विश्लेषण के परिणामों को लिया जाता है इसके द्वारा अनुसंधान के अंतर्गत प्राप्त संबंधित संबंधों के प्रति निष्कर्ष प्राप्त किये जाते है।''प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य धनबाद जिले के शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य के संबंध में एक अध्ययन'' करना है। उपरोक्त अध्ययन के लिए संबंधित समस्या के समाधान हेतु प्रस्तुत उद्देश्यों की पूर्ति तथा परिकल्पनाओं की पुष्टि हेतु वैधता तथा विश्वसनीयता स्तर पर निर्मित उपकरणों का प्रयोग मेरे द्वारा (शोधकर्ता) द्वारा किया गया।

प्रस्तुत शोध के प्रथम उद्देश्य धनबाद जिले के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना हेतु निर्मित परिकल्पना धनबाद जिले के अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा इस परिकल्पना की पुष्टि तालिका क्रमांक 1 एवं 2 के आधार पर सार्थक सिद्ध इस प्रकार द्वितीय परिकल्पना की पुष्टि।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निर्मित चतुर्थ उद्देश्य परिकल्पना धनबाद जिले के अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों (छात्र + छात्राओं) के सामाजिक समन्वय में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा इस परिकल्पना की पुष्टि सामाजिक सामंजस्य फलांकन तालिका क्रमांक 3 एवं 4 के आधार पर सार्थक सिद्ध होती है।

6. प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निर्मित षष्ठम उद्देश्य धनबाद जिले के अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों (छात्र + छात्राओं) के मानसिक स्वास्थ्य का सामाजिक समन्वय पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा की पुष्टि फलांकन तालिका क्रमांक 5,6,7,8 आधार पर सार्थ सिद्ध होती है।

परिणामों की व्याख्या

विभेदात्मक अध्ययन से संबंधित परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं विवेचन

परिकल्पना 2

धनबाद जिले के अशासकीय उच्चतर विद्यालयों के विद्यार्थियों (छात्र + छात्राओं) के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।

परिणाम :– प्रस्तुत अध्ययन में उपर्युक्त परिकल्पना की जाँच हेतु धनबाद जिले के अशासकीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं को मानसिक स्वास्थ्य मापनी का वितरण एवं प्रशासन किया गया तथा उनके आंकड़े प्राप्त किये गये इन आंकड़ो को तालिका में प्रस्तुत किया गया है तथा स्टेनाईन अंक 2 स्कोर प्राप्त किया गया है। इस प्रकार सार्थक अंतर नहीं पाये जाने पर इस परिकल्पना की पुष्टि होती है।

निषकर्ष :– अतः यह निषकर्ष निकाला गया कि शोधार्थी द्वारा अपने उद्धेश्य के पूर्ति के लिए निर्मित परिकल्पना '' धनबाद जिले के अशासकीय उच्चतर विद्यालयों के विद्यार्थियों (छात्र + छात्राओं) के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा '' सही पाई गई।

परिकल्पना 3

धनबाद जिले के अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक समन्वय में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।

परिणाम :– प्रस्तुत अध्ययन हेतु धनबाद जिले के अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों को सामाजिक सामंजस्य अनुसूची का वितरण कि एवं प्रशासन किया गया तथा प्रस्तुत परिणामों

को तालिका क्रमांक 4.5 अ एवं 4.5 ब में प्रस्तुत ' स्कोर में सार्थक अंतर नहीं होने पर यह चौथीं परिकल्पना भी सार्थक सिद्ध होती है।

निषकर्ष :– अतः यह निषकर्ष निकाला गया कि शोधार्थी द्वारा अपने उद्धेश्य के पूर्ति के लिए निर्मित परिकल्पना '' धनबाद जिले के अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक समन्वय में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा '' सही पाई गई।

परिकल्पना 5

धनबाद जिले के अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का सामाजिक समन्वय पर सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा ।

परिणाम :– इस अध्ययन हेतु धनबाद जिले के अशासकीय विद्यालय के विद्यार्थियों छात्र–छात्राओं को सामाजिक सामंजस्य अनुसूची एवं मानसिक स्वास्थ्य बैटरी का वितरण एवं प्रशासन किया गया तथा प्राप्त आंकड़ो को तालिका में प्रस्तुत कर ' स्कोर प्राप्त किया गया इस प्रकार ' स्कोर में सार्थक अंतर नहीं प्राप्त हुआ अतः अध्ययन की छठवीं परिकल्पना भी सार्थक सिद्ध होती है।

निषकर्ष :– अतः यह निषकर्ष निकाला गया कि शोधार्थी द्वारा अपने उद्धेश्य के पूर्ति के लिए निर्मित परिकल्पना '' धनबाद जिले के अशासकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का सामाजिक समन्वय पर सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा '' सही पाई गई।

अध्ययन की शैक्षणिक उपयोगिता –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में धनबाद जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक समन्वय का अध्ययन किया गया है। शिला एवं समाज का घनिष्ठ संबंध है। अभिभावक एवं विद्यार्थी इस व्यवस्था के मजबूत अंग है। चूंकि विद्यार्थियों को समाज के भावी निर्माताओं के रुप में देखा जाता है और एक समाज की उन्नति की जिम्मेदारी हमारे इन्हीं विद्यार्थियों की होती है। विद्यार्थियों की शिक्षा, उनका परिवार उनका व्यवहार एवं उस व्यवहार को फलित रुप ही एक स्वस्थ समाज होता है। अतः विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों की शिक्षा में तथा वहां के शैक्षिक वातावरण में उपयोगी परिवर्तनों के आधार

पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्यि एवं समायोजन अथवा सामंजस्य की स्थिति को मजबूत किया जा सकता है। शिक्षकों, अभिभावकों एवं अन्य संरचनाओं के उचित एवं प्रबंधित मार्गदर्शन के द्वारा विद्यार्थियों को निर्देशित किया जा सकेगा। सीखने की सहज एवं जन्मजाति प्रक्रिया को समायोजन में महत्वपूर्ण स्थान है। समय–समय पर उचित दिशा–निर्देश एवं सहगामी क्रियाओं के आधार पर उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य की अभिवृद्धि हेतु कार्य किये जा सकते हैं। देशकाल एवं वातावरण के अनुसार वातावरण में उपस्थित विभिन्नताओं को समझने व उनमें एकरुपता लाने के लिए शैक्षिक व सामाजिक वातावरण में समायोजन की प्रक्रिया अपनाई जा सकती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अभिमापों के द्वारा विद्यार्थियों के प्रोत्साहन की क्रिया को उचित रुप से अपनाया जा सकता है। विद्यार्थियों तथा समाज एवं परिवार के मध्य अनुकूलन तथा सामंजस्य के लिए शीलगुणों का विकास किया जाना चाहिए इस हेतु विद्यार्थी, शिक्षक एंव अभिभावक तीनों अपनी–अपनी भूमिका को समझकर अनुकूलन सीापित कर पाएँगे एवं समायोजन को प्राप्त कर पाएँगे। अभिभावको एवं शिक्षकों द्वारा उचित मार्गदर्शन एवं शिक्षा तथा प्रोत्साहन प्राप्त होने पर विद्यार्थी अपने समुचित शक्तियों का विकास कर पायेंगे, उनकी सकारात्मकता मानसिक शक्तियों का विकास होगा जिसके परिणामस्वरुप समाज लाभान्वित होगा।

भावी शोध हेतु प्रस्तावित विषय :–

1/ अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं वृत्तिक जागरुकता का अध्ययन।

2/ अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों के वृत्तिक विकास तथा रोजगार चयन को प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन्।

3/ अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की बुद्धिपलब्धि एवं वृत्तिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन्।

4/ अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की अंर्तमुखी स्वभाव का सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

5/आर्थिक रुप से सक्षम अभिभावकों के बालकों एवं निर्धन अभिभावकों के किशोरावस्था बालकों का सामाजिक समन्वय एवं मानसिक स्थावस्था को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन्।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- अस्थाना एवं अस्थाना, (2005), *मनोविज्ञान और शिक्षायें मापन एवं मल्याकन* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा . पृष्ठ संख्या 434–435
- अग्रवाल, एस. के., (1980) *शिक्षा के तात्विक, सिद्धांत,* राजेश पब्लिशिंग हाउस, मेरठ, पृष्ठ संख्या 321–335
- अग्रवाल, डॉ.जी.के., (1980) *मानव समाज,* आगरा ओम प्रिटिंग प्रेस , पचकुइंया. पृष्ठ संख्या 134–135
- गोवे, डब्बु और ह्यूजेस, एम (1979) *शारीरिक स्वास्थ्य में स्पष्ट लिय अंतर के संभावित कारण एक अनुभवजन्य जांच.* अमेरिकी समाज सगीक्षा, 44: 126–146
- चित्रा, उमा 1993–2000 एट आल इट इज ऐन अटेम्ड टू स्टडी द एजकेशनल अचीवमेंट इन रिलेशन टू सम ऑफ द साइको – *सोसल फेक्टर्स ऑफ द सोशली डिप्राइव्ड हरिजन्स सिकसथ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च,* वैल्यूम – पृ0सं0–466
- चोबे डा. सरयू प्रसाद (1993), *सामाजिक मनोविज्ञान आगरा,* साहित्य भवन, पृष्ठ संख्या – 110–115
- भार्गव, महेश, (1992), " आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन ,प्रसाद भार्गव, शैक्षिक प्रकाशन, 1 / 230, कचहरी घाट, आगरा,
- माथुर, डॉ. एस.एस (2009) *"शिक्षा मनोविज्ञान"*, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा – 2, पृष्ठ 60
- मिश्र, आनन्द, (1999), *"भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक"* विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, कानपुर